जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

क्रमबद्धपर्याय का निर्णय स्वयं अनन्त पुरुषार्थ का कार्य है; क्योंकि क्रमबद्ध-पर्याय के निर्णय में सर्वज्ञता का निर्णय समाहित है।
ह्न क्रमबद्धपर्याय, पृष्ठ : 56

वर्ष : 29, अंक : 4 | सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मई (द्वितीय), 2006 | प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

40 वें शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन

देवलाली (नासिक-महा.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा दिनांक 9 मई से 26 मई, 2006 तक आयोजित 40 वें श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन समारोह मंगलवार, दिनांक 9 मई, 2006 को श्री मुकुंदभाई खारा की अध्यक्षता में सानन्द सम्पन्न हुआ।

झण्डारोहण एवं शिविर का उद्घाटन श्री कान्तिभाई विपुलभाई हितेनभाई मोटाणी परिवार, मुम्बई के करकमलों से किया गया।

मुख्यअतिथि श्री रमेशजी मंगलजी मेहता, मुम्बई एवं विशिष्ट अतिथि श्री अनंतभाई सेठ मुम्बई, श्री सुमनभाई दोशी राजकोट, श्री जुगराजजी कासलीवाल कोलकाता एवं श्री इन्द्रजीतजी गंगवाल इन्दौर आदि मंचासीन थे।

उद्घाटन समारोह में श्रीमान मुकुन्दभाई खारा ने आगन्तुक विद्वद्गण एवं अतिथियों का स्वागत करते हुये पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली का परिचय दिया तथा यह शिविर देवलाली में छठवीं बार लगाने की स्वीकृति प्रदान करने के लिये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का आभार व्यक्त किया। शिविर का महत्त्व बताते हुए उन्होंने इसे तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिये अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बताया।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के ट्रस्टी एवं प्रकाशन मंत्री ब्र. यशपालजी जैन ने ट्रस्ट द्वारा संचालित गतिविधियों का परिचय देते हुये दक्षिण भारत में भी आध्यात्मिक सत्पुरुषश्री कानजीस्वामी द्वारा प्रचारित तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की भरपूर संभावना बताई तथा वहाँ चल रहे विभिन्न कार्यों का परिचय दिया।

पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने शिविरों के मूल प्रेरणास्रोत पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के योगदान का स्मरण करते हुये शिविर का परिचय एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

आपके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री एवं श्री अनन्तभाई सेठ का भी उद्बोधन प्राप्त हुआ।

उपर्युक्त अतिथि एवं विद्वानों के साथ ब्र. हेमचन्दज'हेम' देवलाली, पण्डित जवाहरलालजी बड़कुल विदिशा, पण्डित दिनेशभाई शहा मुम्बई, पण्डित कोमलचन्दजी द्रोणगिरि, पण्डित कमलकुमारजी पिड़ावा, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर, श्रीमती कमलाजी भारिल्ल जयपुर, श्रीमती उज्ज्वलाजी शहा मुम्बई आदि विद्वान व अध्यापक-गण भी मंचासीन थे।

इस अवसर पर डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया द्वारा बालकों के लिये लिखी हुई 'जैन जी. के. (भाग - 1 व 2)' का विमोचन किया गया।

सभा का संचालन पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री एवं आभार प्रदर्शन श्री सुमनभाई दोशी ने किया।

उद्घाटन समारोह से पूर्व प्रात: मंगल कलश शोभायात्रा पूर्वक मानस्तंभ के समक्ष देव-शास्त्र-गुरु पूजन हुई तथा गुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचन का लाभ मिला।

शिविर के विस्तृत समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे। ●

उपकार दिवस मनाया

1. देवलाली (नासिक-महा.) : यहाँ पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 25 से 29 अप्रैल, 2006 तक आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की 117 वीं जन्मजयंती उत्साहपूर्वक मनायी गई।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के अलिंगग्रहण के बोलों पर मार्मिक प्रवचन हुये। आपके अलावा पं. पूनमचन्दजी छाबड़ा, पं. अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित हेमचन्दजी 'हेम' एवं पण्डित कोमलचन्दजी के भी प्रवचनों का लाभ मिला।

इस प्रसंग पर श्रीमती ज्योत्स्नाबेन महेन्द्रभाई भालाणी परिवार, मुम्बई द्वारा श्री भक्तामर मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य विधानाचार्य पण्डित मधुकरजी जलगाँव, पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर ने सम्पन्न कराये।

समस्त कार्यक्रम बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

2. बाँसवाड़ा (राज.) : यहाँ निर्माणाधीन तीर्थ **ध्रुवधाम** में दिनांक 28 अप्रैल को आचार्य अकंलक शिक्षण संस्थान के छात्रों को गुरुदेवश्री के जीवन परिचय की वी. सी. डी. दिखाई गई तथा 29 अप्रैल को छात्रों द्वारा गुरुदेवश्री के जीवन चरित्र पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। ●

साधना चैनल देखना न भूलें

रात्रि 10.20 पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनों को देखना न भूलें। प्रवचन प्रसारण में कोई समस्या हो तो श्री पीयूषकुमारजी शास्त्री से 09414717829 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय –

ये तो सोचा ही नहीं

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

3.सच्ची प्रीति पैसे की मुँहताज नहीं होती..

(गतांक से आगे....)

सुनीता ऐसी कुलीन, उदार और सास-ससुर एवं परिवार की सेवा में समर्पित गृहणी है, जिसने अपने कर्तव्य और दायित्व को ही सर्वोपरि रखा। वह यह बात अच्छी तरह समझती है कि ह्न **प्रत्येक माता-पिता अपनी संतान से बहुत आशायें और अपेक्षायें रखते हैं। उनके अपने सपने होते हैं।**

वे ऐसी कल्पनायें करते हैं कि ह्न **''बेटा बड़ा होगा, उसका हम ठाट-बाट से ब्याह करेंगे। घर में एक प्यारी-सी हँसती-मुस्कुराती सेवा भावनाओं से भरी बहू आयेगी। फिर क्या है ? बिना कुछ किए ह्न बैठे-बैठे प्रात: गरम-गरम चाय-नाश्ता और दोपहर में एवं शाम को गरम-गरम फुलके मिलने लगेंगे। फिर हमें क्या चिन्ता ? आनन्द से बुढ़ापा बीत जायेगा.....।** थोड़े ही दिनों की ही तो बात है; ये प्रतीक्षा के दिन भी धीरे-धीरे बीत जायेंगे। अभी तो किसी का एक गिलास पानी का सहारा भी नहीं है।

मैंने तो इनसे कहा ह्न बेटे की शादी कर लो, पर ये सुने तब न ! कहते हैं, बस दो वर्ष की पढ़ाई और है, वह पूरी हुई नहीं कि फिर एक दिन की भी देर नहीं होने देंगे। मैं भी क्या करूँ ? ये प्राणलेवा बीमारियाँ न सुख से जीने ही देती और न चैन से मौत आती है। दो वर्ष तो बीस वर्ष से लग रहे हैं।

ऐसी आशायें लिए बैठी माताओं की यदि आशायें पूरी न हों, उनकी आशाओं के अनुरूप उनके स्वप्न पूरे नहीं हुए तो कैसी मानसिक पीड़ा होती है; यह तो भुक्त-भोगी ही जानता है।

संभवत: यही सब सोचकर सुनीता ने निश्चय किया कि ह्न ''मेरा प्रथम कर्त्तव्य अपने माता-पिता तुल्य सास-ससुर की सेवा में रहना ही है। जबतक इनका जीवन है, मैं अपनी सुख-सुविधा की परवाह न करके इन्हें अपनी आँखों से ओझल नहीं होने दूँगी।''

बस इसी दृढ़ निश्चय का निर्वाह करते हुए सुनीता ने अपने एवं अपने पति के सुख-दु:ख की परवाह नहीं की।

ज्ञानेश को भी यही अभीष्ट था। वह भी यही चाहता था, उसका सबसे पहला स्वप्न यही था कि ह्न मुझे ऐसी सहधर्मिणी मिले जो मुझसे अधिक मेरे माता-पिता की सुख-सुविधा का ध्यान रखे। अपनी सेवा से, मधुर वाणी से और सद्व्यवहार से उनके सम्मान को सुरक्षित रखते हुए उनके सुख-दु:ख में सहभागी बने।

अपनी भावना, अपने स्वप्न को साकार होता देख वह इतना अधिक खुश था कि जसे शब्दों में बाँधना संभव नहीं है। इससे उसके दाम्पत्य प्रेम में तो चार चाँद ही लग गये। ज्ञानेश के मन में भी अपने सास-ससुर (सुनीता के माता-पिता) के सुख-दु:ख में सहभागी बनने की भावना प्रबल हो गई।

ज्ञानेश ने सुनीता से कहा ह्न ''क्यों न तुम्हारे मम्मी-पापा को भी यहीं बुला लें। दो की जगह चारों की सेवा साथ-साथ होती रहेगी।वे विचारे वहाँ इस उम्र में अकेले परेशान हो रहे होंगे। सेवा के लिए सर्वेन्ट हैं, यह ठीक है; पर सर्वेन्ट तो आखिर सर्वेन्ट ही होते हैं। उनसे काम कराना भी तो कोई कम सिरदर्द का काम नहीं है। हम लोग स्वयं उनकी सेवा में रहेंगे, उन्हें अपनी देख-रेख में रखेंगे तो हमें तो सन्तोष रहेगा ही; उन्हें भी आराम मिलेगा। उनके लिए अलग से नौकर रख लेंगे। इससे मम्मी-पापा को कोई टेन्शन नहीं रहेगी। यहाँ उन्हें धार्मिक वातावरण भी सहज में ही मिल जायेगा।

मेरी तो यह इच्छा है कि तुम आज ही उन्हें फोन करो, फिर जब वे कहेंगे, मैं जाकर ले आऊँगा। इस माह में अपने तीन बेडरूम वाले नये फ्लैट की चाबी भी मिल जायेगी। उसमें उन्हें अपनी पसंद के अनुकूल सुख-सुविधायें भी जुट ही जायेंगी।''

ज्ञानेश के ऐसे भद्र और उदार विचार सुनकर सुनीता भी गद्गद् हो गई; क्योंकि अपने माता-पिता की सुख-सुविधा का ख्याल तो अच्छे लड़के ही रखते है। सुख-सुविधा के बारे में ऐसे विचार ज्ञानेश जैसे विरले के ही होते हैं। ●

४. अच्छे अवसर द्वार खटखटाते आते हैं

अच्छी वस्तु घर आती है और बुरी वस्तु को लेने जाना पड़ता है। दूध घर आता है, शराब को लेने जाना पड़ता है। अच्छे अवसर घर का द्वार खटखटाते आते है, ''कहते हैं कि जब किसी भी भले काम करने की स्वयं की तैयारी होती है तो साधनों की भी कमी नहीं रहती। जब अपनी भली होनहार होती है तो अच्छे निमित्त कारण तो आसमान से उतर आते हैं।

ज्ञानेश के साथ भी यही हुआ। एक वयोवृद्ध विद्वान् श्री दिनेश शास्त्री कहीं जा रहे थे कि ज्ञानेश के नगर के निकट ही उनकी गाड़ी अचानक खराब हो गई। उन्हें वहाँ रुकना पड़ा। ज्ञानेश एवं नगरवासियों के निवेदन पर दिनेश शास्त्री के प्रवचन का लाभ तो सबको मिला ही, ज्ञानेश ने भी अपने मन में बहुत दिनों से संजोये प्रश्न पूछ लिये।

ज्ञानेश का प्रथम प्रश्न था ह्न बहुत बार ऐसा होता है कि न्यायपूर्वक सही काम करते हुए भी सफलता नहीं मिलती !

शास्त्रीजी ने कहा – ''यह सच है कि श्रम करते हुए भी यदि पुण्योदय न हो, भाग्य साथ न दे तो सफलता नहीं मिलती, पर गीता में भी यही कहा है ह्न कर्मण्ये वाधिकारः मा फलेषु कदाचनः। आप काम करते जाओ फल की वांछा मत करो। वह समय पर स्वतः मिलेगा।

किसी भी काम का फल हमें अपने परिणामों (भावों) के अनुसार ही मिलता है न ? अत: हमें अपने परिणामों (भावों) को पहचानना होगा। भाव तीन तरह के होते हैं ह्न शुभ, अशुभ और शुद्ध। हमें देखना यह है कि जब हम कोई भी काम करते हैं; उस समय हमारे परिणाम (भाव) कैसे होते हैं ? वस्तुत: शरीर की क्रिया का तो कुछ फल ही नहीं है। पुण्य-पाप का बन्ध तो अपनी मान्यता और भावों या परिणामों पर ही निर्भर करता है। यदि हम लौकिक फल की वांछा रखते हैं, निष्काम कर्म नहीं करते तो पुण्य की

प्राप्ति कैसे होगी ? फिर भी तुम्हें कुछ लाभ तो हुआ ही है।

अच्छा तुम ही बताओ ? यदि तुम बचपन से स्वाध्यायी नहीं रहे होते तो क्या तुम्हारे मन में ऐसे सद्विचार आते?

यदि परोपकार नहीं करते तो किसी पारिवारिक गोरख धंधे में उलझे होते। निश्चित ही किसी न किसी पापप्रवृत्ति में ही पड़े होते, कोई न कोई राग-द्वेष वर्द्धक विकथा ही करते होते। जितना समय परोपकार में, परहित में गया, उतनी देर विषय-कषाय रूप पापों से तो बचे ही रहे न ? हानि क्या हुई ? **पर लौकिक कामनाओं की पूर्ति हेतु अहिंसा एवं सत्य आदि का आचरण तो आवश्यक है ही, धनार्जन भी ऐसे पवित्र भावों से स्वतः ही होता है।** पाप कार्यों से समुद्र में फैंके मणि की भाँति ऐसे सु-अवसर दुर्लभ हो जाते हैं; जिसमें सत्य की शोध की जा सकती है।

ज्ञानेश ने हार्दिक प्रसन्नता प्रगट करते हुए शास्त्री जी से कहा ह्न मेरी समझ में यह तो आ गया कि नि:स्वार्थभाव से लौकिक विषयों की कामना किए बिना प्रतिदिन परमात्मा की पूजा और परोपकार करना सर्वथा निरर्थक नहीं है। पापभावों से तो बचे ही रहते हैं; तथा धर्म के बारे में विशेष जानने की जिज्ञासा भी जगती ही है। नि:संदेह इतना लाभ तो मुझे भी हुआ ही है।

दिनेश शास्त्री ने समझाया - **''भाई! सचमुच तो जगत में जो भी सुख-दुःख होता है, वह सब अपने-अपने पुण्य-पाप के फल के अनुसार ही होता है, अपनी-अपनी करनी के अनुसार ही होता है।**

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध महाकवि तुलसीदास ने भी इसी बात का समर्थन करते हुए लिखा है कि ह्न

'कर्मप्रधान विश्व करि राखा, जो जस करै सो फल चाखा।'

इस सन्दर्भ में जैनाचार्य अमितगति के सामायिक पाठ का हिन्दी अनुवाद भी दृष्टव्य है -

'स्वयं किये जो कर्म शुभाशुभ, फल निश्चय ही वे देते।
करे आप फल देय अन्य तो स्वयं किये निष्फल होते।।'

दौड़े-दौड़े चले आनेवाले देवी-देवता भी पुण्य के प्रताप से ही आते हैं। पापोदय में तो देवी-देवता भी मदद नहीं करते।

वस्तुत: परमात्मा की पूजा-भक्ति भी किसी को प्रसन्न करने और लौकिक कार्यों की सिद्धि के लिए नहीं की जाती। व्यक्ति का जिसके गुणों में अनुराग हो जाता है, उसके प्रति भक्ति की भावना स्वयं उमड़ती है ।

आज तो लोगों की यह हालत है कि दिन-रात घोर पाप करते रहते हैं, और प्रतिदिन सुबह-शाम मन्दिर में बेझिझक भगवान के सामने हाथ फैलाकर हाव-भाव के साथ अपने किए पाप को डिक्लेयर करते हुए, क्षमा याचना की प्रार्थना करते हैं और मान लेते हैं कि भगवान ने हमारे सब पाप माफ कर दिए। क्या ऐसा करने से सचमुच पाप कट जाते हैं ? नहीं, कभी नहीं, पापों का फल तो भोगना ही पड़ेगा।

अपनी क्षमायाचना के प्रदर्शन में हम मन्दिर में जाकर भगवान के सामने हल्फिया बयान देते हैं, यदि यही बयान न्यायालय में न्यायाधीश के सामने दिये जाये तो क्या न्याय के सिंहासन पर विराजे न्यायाधीश द्वारा हम तुरंत जेल में अन्दर नहीं कर दिये जायेंगे ?

अन्याय तो प्रकृति में भी नहीं है, तभी तो हम संसार की जेल में जन्म-मरण का दण्ड भुगत रहे हैं। पापों का फल भोगे बिना तथा अपराधवृत्ति छोड़े बिना इस दु:ख से छुटकारा पाने का अन्य कोई उपाय नहीं है।

हमें यह भ्रम निकाल देना चाहिए कि हम पाप करते रहेंगे और प्रायश्चित करने से भगवान हमारे अपराधों को माफ करते रहेंगे, हमें क्षमा प्रदान करते रहेंगे।

प्रायश्चित व आलोचना तो इसलिए किये जाते हैं कि हम अपने दोषों और अपराधों को स्वीकार कर उनकी पुनरावृत्ति न करें। जब तक पुनरावृत्ति होती रहेगी, तब तक अपने दोषों के प्रगट करते रहने मात्र से ही प्रयोजन की पूर्ति होना सम्भव नहीं है।

जो लोग प्रतिदिन प्रायश्चित करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं और समझ लेते हैं कि हमारे सब पापों का प्रक्षालन हो गया है, वे भ्रम में हैं। उनकी पापमय प्रवृत्ति जहाँ की तहाँ है, बिल्कुल भी नहीं घट रही है। अत: यही मानना न्याय संगत है कि जो भी पाप या अपराध हमने किये या कर रहे हैं, उन्हें कोई भी भगवान माफ नहीं करते और कर भी नहीं सकते। उनका फल तो उन्हें भोगना ही होगा अन्यथा विश्व की व्यवस्था ही गड़बड़ा जायेगी।

हाँ, जबतक परमात्मा हमारे ध्यान में विचरेंगे; तबतक पाँचों पाप, पाँचों इन्द्रियों के विषय एवं राग-द्वेषादि मनोविकार हमारे ध्यान में आ ही नहीं सकेंगे; क्योंकि ध्यान में परमात्मा और पाप एक साथ नहीं ठहरते। देव मन्दिर की मर्यादित सीमा में भी विषय-विषधर प्रवेश नहीं कर पाते; क्योंकि मन्दिर में भगवान के दर्शन पूजन करते समय क्रोध-मान-मायाचारी और लोभ तथा हिंसा करने, झूठ बोलने, चोरी करने, कुशील आदि पाप करने के प्रसंग ही नहीं होते। अन्य स्थानों में किए पापों से मुक्त होने के लिए ही सब व्यक्ति मन्दिर आते हैं। जो व्यक्ति मन्दिर में पाप करता रहेगा, उसे कर्मों का वज्र भुगतना पड़ेगा। वह कभी भी दु:ख से मुक्त नहीं हो सकता।

अन्य अज्ञानी जीवों के भी यदि पूजा करते समय कषाय कम हुई तो उतनी देर तक पापों से निवृत्ति के कारण उन्हें भी यथायोग्य पुण्य की प्राप्ति हो जाती है। यदि किसी के मन में लौकिक कामना से तीव्र कषाय रही तो पूजा जैसे पवित्र कार्य करते हुए भी पापबंध ही होता है; क्योंकि पुण्य-पाप का बंध भी तो शुभ-अशुभ भावों से ही होता है, शारीरिक क्रियाओं से नहीं। पर ध्यान रहे जो शारीरिक क्रिया का पाप करता है, उसके पहले वह पाप उसके मन में पैदा हो जाता है; अत: शारीरिक पाप और क्रोधादि कषाय करनेवाला दण्डित होता ही है।

जो भक्त समझदार होते हैं, वे भगवान की भक्ति-पूजा के साथ उनके बताये मार्ग पर चलते हैं और एक न एक दिन स्वयं भगवान की बाजू में विराजमान हो जाते हैं। इसके विपरीत जो भगवान के भरोसे ही भवकूप में पड़े-पड़े उन्हें केवल पुकारा ही पुकारा करते हैं, उनके बताये मार्ग को सुनने-समझने की कोशिश ही नहीं करते; वे भवकूप से नहीं निकल पाते, संसार सागर से पार नहीं हो पाते। **(क्रमश:)**

ब्र. यशपालजी द्वारा धर्मप्रभावना

मजले (कोल्हापुर-महा.) : यहाँ श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर के पास श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय हॉल में दिनांक 2 से 6 मई, 2006 तक बाल ब्र. यशपालजी जैन के दोपहर में छहढ़ाला एवं रात्रि में जिनधर्मप्रवेशिका पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

आपके अतिरिक्त पण्डित मिलिंदजी केटकाले कोल्हापुर द्वारा दोपहर एवं सायंकाल बालकक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न

सत्तूर (धारवाड़-कर्ना.) : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक पण्डित बाहुबलीजी भोसगे विगत 3-4 वर्षों से यहाँ के गाँववालों को मन्दिर निर्माण हेतु प्रेरित कर रहे थे; जिसके फलस्वरूप यहाँ स्थानीय दिगम्बर जैन समाज के तत्त्वावधान एवं 108 पूज्यश्री सुखसागरजी महाराज के सान्निध्य में दिनांक 9 से 13 अप्रैल, 2006 तक 1008 श्री शांतिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव अनेक मांगलिक कार्यक्रमों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित रायमल्लजी द्वारा रचित 'मन्दिर निर्माण का स्वरूप एवं उसका फल'कृति का श्री भोसगेजी कृत कन्नड अनुवाद का भी विमोचन हुआ।

पंचकल्याणक के पश्चात् गाँव की समाज ने यह भी निर्णय लिया कि दशलक्षण महापर्व में प्रतिवर्ष श्री टोडरमल महाविद्यालय, जयपुर के विद्वान को प्रवचनार्थ आमंत्रित करेंगे ।

मंदिर निर्माण एवं सम्पूर्ण महोत्सव में धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्रजी हेगड़े की बहिन श्रीमती पद्मलता निरंजनकुमारजी का तन-मन-धन से विशेष सहयोग रहा। साथ ही स्थानीय जैन समाज के अध्यक्ष श्री नागप्पा चिणगीजी ने भी दिन-रात परिश्रम कर इस कार्य को सफल बनाया। **ह्न बाहुबली भोसगे**

वेदी शिलान्यास सानन्द सम्पन्न

बाँसवाड़ा (राज.) : यहाँ श्री ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट बाँसवाड़ा द्वारा नवसंस्थापित निर्माणाधीन **रत्नत्रय तीर्थ ध्रुवधाम** में श्री पंचबालयति जिनमन्दिर, श्री सीमन्धर समवशरण, श्री जिनेन्द्र मानस्तंभ आदि सप्तवेदियों का भव्य शिलान्यास दिनांक 16 अप्रैल, 2006 को सानन्द सम्पन्न हुआ।

प्रात: जिनेन्द्र-प्रक्षाल व पूजनोपरान्त आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी. डी. प्रवचन का लाभ उपस्थित साधर्मियों को मिला।

शिलान्यास विधि के सम्पूर्ण कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के निर्देशन में पण्डित राकेशजी दोशी दाहोद, पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री कोटा, पण्डित कांतीलालजी जैन इन्दौर, पण्डित रीतेशजी शास्त्री डडूका, पण्डित आकाशजी शास्त्री छिन्दवाड़ा एवं आचार्य अकलंक शिक्षण संस्थान के छात्रों द्वारा कराये गये।

श्री जिनेन्द्र मानस्तम्भ का शिलान्यास श्रीमती बासन्तीबेन, डॉ. समीर व डॉ. गार्गी शाह परिवार मुम्बई, श्री सीमन्धरस्वामी समवशरण का शिलान्यास श्री चन्द्रेशभाई एल. भूता तथा अन्य जिनवेदियों का शिलान्यास श्री निहालचन्दजी ओसवाल जयपुर, श्री बाबूलालजी पंचोली थांदला, श्री धूलजीभाई महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री विकास जे. भूता, श्री प्रीतेश एस. भूता द्वारा किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा ने किया। **ह्न गणतंत्र जैन**

शिखर शिलान्यास महोत्सव सम्पन्न

गजपंथा (महा.) : श्री सप्त बलभद्रादि अनेक मुनिराजों की निर्वाणस्थली गजपंथा सिद्धक्षेत्र पर दिनांक 29 व 30 अप्रैल, 2006 को वासना चौधरी ग्राम (गुज.) के मुमुक्षु भाईयों द्वारा निर्मित श्री विमलनाथ दिग. जैन मन्दिर का 6 वाँ वार्षिकोत्सव एवं शिखर शिलान्यास महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर 29 अप्रैल को प्रात: शोभायात्रा पूर्वक पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया। दोपहर में ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, गजपंथा एवं पण्डित नीलेशजी जैन, मुम्बई तथा रात्रि में पण्डित मधुकरजी जैन, जलगाँव एवं ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के व्याख्यान का लाभ मिला।

30 अप्रैल को प्रात: पूजनोपरान्त शिलान्यास सभा में ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री ने शिलान्यास के प्रयोजन व महत्त्व पर प्रकाश डाला। पश्चात् शिलान्यासकर्त्ता श्री वसंतलालजी चंदुलालजी शाह परिवार एवं श्री नाथालालजी वेणीचन्दजी शाह परिवार मुम्बई के करकमलों से शिलान्यास-विधि सम्पन्न हुई। साथ ही श्री जयंतीभाई दोशी परिवार मुम्बई द्वारा नवनिर्मित आत्मविज्ञान संग्रहालय का उद्घाटन किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल एवं पण्डित निखिलजी शास्त्री, कोतमा ने कराये। ●

श्रोताओं को भी वक्तृत्व का अवसर

नागपुर (महा.) : श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर, इतवारी में बाल ब्र. यशपालजी जैन की प्रेरणा से दैनिक स्वाध्याय सभा में आनेवाले श्रोताओं को भी वक्तृत्व का अवसर मिले, इस उद्देश्य से प्रारंभ की गई योजना के अन्तर्गत प्रति रविवार को दो श्रोता प्रवचन करते हैं।

जिसमें अभी तक श्री मनोहरजी सोईतकर, श्रीमती शकुनजी जैन, श्री संजयजी मारवड़कर, कु. ज्योतिजी जैन, श्रीमती शोभाजी जैन एवं श्री विश्वलोचनकुमारजी जैनी के प्रवचन हो चुके है।

स्थानीय समाज द्वारा इस योजना को अच्छा समर्थन प्राप्त हो रहा है। वक्ता का नाम एक सप्ताह पहले से ही घोषित कर दिया जाता है। देश के अन्य स्वाध्याय मण्डल भी इसप्रकार की योजना प्रारंभ करते हुये समाज में एक विशेष जागृति ला सकते हैं। **ह्न अशोक जैन**

हस्तिनापुर गुरुकुल में प्रवेश प्रारंभ

राजकिय मान्यताप्राप्त श्री दिगम्बर जैन उत्तरप्रान्तीय गुरुकुल, हस्तिनापुर जि. मेरठ (उ.प्र.) में कक्षा 4 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए नवीन सत्र हेतु दिनांक 1 जुलाई, 2006 से प्रवेश प्रारंभ होने जा रहा है।

यहाँ भोजन-आवास आदि की उत्तम व्यवस्था के साथ बालकों को धार्मिक शिक्षा व कम्प्यूटर शिक्षा भी दी जाती है।

किसी भी राज्य के विद्यार्थी यहाँ प्रवेश ले सकते है; एतदर्थ प्रवेश फार्म दिनांक 15 जून, 2006 तक भरे जा सकते हैं। दिनांक 2 जुलाई को लिखित परीक्षा व साक्षात्कार गुरुकुल भवन, हस्तिनापुर में होगा।

पता ह्न श्री अशोक जैन (सह सचिव),
श्री दिगम्बर जैन उत्तरप्रान्तीय गुरुकुल, मु.पो. हस्तिनापुर,
जि. मेरठ (उ.प्र.) 250404 फोन : 011- 22512098

ग्रीष्मावकाश में बालकों को संस्कारित करने हेतु

बाल संस्कार शिक्षण-शिविरों की धूम

1. इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ साधनानगर स्थित श्री पंचबालयति एवं विहरमान बीस तीर्थंकर जिनालय में पंचम जैनत्व बाल संस्कार-शिविर दिनांक 30 अप्रैल से 7 मई, 2006 तक आयोजित हुआ।

शिविर में इन्दौर के विभिन्न उपनगरों के लगभग 874 जैन व जैनेतर बालकों ने भाग लिया; जिसमें 19 विभिन्न धार्मिक कक्षाओं के माध्यम से उक्त छात्रों को धार्मिक व नैतिक संस्कारों के साथ जैनदर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों से संस्कारित किया गया।

शिविर में पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, विदुषी राजकुमारीजी जैन जयपुर, पण्डित अशोकजी मांगूलकर राघौगढ़, पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित विक्रान्तजी पाटनी झालरापाटन, पण्डित कमलेशजी शास्त्री घुवारा, पण्डित आकाशजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित अंचलप्रकाशजी शास्त्री ललितपुर, पण्डित सचिनजी शास्त्री जबेरा, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल, पण्डित रोहनजी रोटे कोल्हापुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सन्मतिजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित धीरजजी शास्त्री जबेरा, पण्डित अमितजी शास्त्री गुना, पण्डित विनयजी शास्त्री बून्दी, पण्डित प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर, पण्डित रवीन्द्रजी महाजन परभणी, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री केलवाड़ा, पण्डित अंकितजी शास्त्री कोलारस, पण्डित नीतेशजी आरोन, पण्डित अनुरागजी भगवाँ के अतिरिक्त स्थानीय विद्वानों में पण्डित सुशीलकुमारजी, पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल, पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल, पण्डित सौरभजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री आदि 27 विद्वानों के माध्यम से सम्पूर्ण कक्षायें संचालित की गई। स्थानीय विद्वानों द्वारा प्रौढ़ों के लिये भी पृथक शिक्षण-कक्षाओं का आयोजन किया गया।

सायंकालीन समय में इन्दौर के विभिन्न 8 जिनालयों में भी कक्षा व प्रवचनों का आयोजन हुआ। साथ ही शिविर के मध्य बालकों के विकास हेतु विभिन्न धार्मिक व लौकिक प्रतियोगितायें भी कराई गयी। बालकों के आवास-भोजन, आवागमन आदि की सम्पूर्ण व्यवस्थायें नि:शुल्क की गई थी।

अन्तिम दिन छात्रों की परीक्षा ली गई; जिसका परीणाम शत-प्रतिशत रहा। उत्तीर्ण समस्त छात्रों को समाजसेवी श्री आर. के. जैन द्वारा पुरस्कार वितरित किये गये। शिविर प्रतिभा के रूप में प्रकल्प जैन इन्दौर, कु. प्रियांशी जैन सनावद, कु. आयुषी जैन इन्दौर, कु. मेघा जैन इन्दौर एवं कु. सेठी इन्दौर ने श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया।

दिनांक 7 मई को समापन समारोह में श्री मनोहरलालजी काला ने शिविर के संबंध जानकारी दी। आभार प्रदर्शन श्री तेजकुमारजी गंगवाल ने किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम शिविर के प्रमुख संयोजक श्री विजयकुमारजी बड़जात्या के निर्देशन में सम्पन्न हुये। **ह्न राजेन्द्र पहाड़िया**

2. देवलाली (महा.) : यहाँ पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट में प्रतिवर्ष ग्रीष्मावकाश पर मुम्बई के बालकों के लिये आयोजित होनेवाले शिक्षण-शिविर की श्रृखंला का अष्टम बाल संस्कार शिविर इस वर्ष दिनांक 30 अप्रैल से 7 मई, 2006 तक आयोजित किया गया।

शिविर में पण्डित बाबूभाईजी मेहता फतेपुर, पण्डित कोमलचन्दजी द्रोणगिरि, पण्डित ऋषभजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित उदयमणीजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ़, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़, ब्र. चेतनाबेन, कु. जयतिजी एवं श्रीमती स्वस्तिजी जैन जबलपुर द्वारा बालकों को विभिन्न धार्मिक कक्षाओं के माध्यम से जैनदर्शन के प्रारंभिक मूलतत्त्वों का ज्ञान कराया गया।

प्रात: जिनेन्द्र प्रक्षाल-पूजनविधी, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में कार्यक्रम कराये गये। साथ ही गुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित विरागजी द्वारा संगीतमय जैन कथा का प्रस्तुतिकरण किया गया।

शिविर के मध्य श्रीमती कंकुबेन रिखबदास शाह परिवार दादर-मुम्बई द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउण्डेशन द्वारा निर्मित 'हम होंगे ज्ञानवान' वी. सी. डी का विमोचन कर प्रत्येक छात्र को भेंट दी गई।

3. दाहोद (गुज.) : श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं ज्ञानसुधा मण्डल दाहोद के तत्त्वावधान में दिनांक 22 से 29 अप्रैल, 2006 तक बाल संस्कार शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित चैतन्यकुमारजी शास्त्री कोटा के प्रवचनों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ तथा ब्र. पुष्पलताजी झांझरी, ब्र. ज्ञानधाराजी झांझरी, ब्र. समताजी झांझरी उज्जैन एवं डॉ. ममताजी जैन बाँसवाड़ा द्वारा बाल-युवा व महिला वर्ग की कक्षायें संचालित की गई।

दिनांक 29 अप्रैल को गुरुदेवश्री की 117 वीं जन्मजयन्ती के अवसर पर 117 ध्वजायें लेकर जिनेन्द्र शोभायात्रा निकाली गई।

शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित राकेशजी शास्त्री दाहोद एवं पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री के संयोजकत्व में कराये गये। **ह्न राकेश दोशी**

ज्ञातव्य है कि मई एवं जून माह में खण्डवा, ग्वालियर, हिंगोली, नागपुर, कोल्हापुर, उदयपुर, भिण्ड, कोटा, रावतभाटा आदि स्थानों पर भी बालकों के लिये बाल संस्कार शिविर एवं ग्रुप शिविरों का आयोजन किया जा रहा है।

पाठशालाओं का संचालन

सोलापुर (महा.) : श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के स्नातक पण्डित प्रशांतकुमारजी मोहरे द्वारा विगत दो वर्षों से सोलापुर स्थित विभिन्न जैन मन्दिरों में साप्ताहिक एवं दैनिक पाठशालायें संचालित की जा रही है।

वर्तमान में आपके द्वारा (1) श्री 1008 आदिनाथ दि. जैन मन्दिर, (2) श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ दि. जैन कासार मन्दिर, (3) श्री आदिनाथ दि. जैन बुवणे मन्दिर, (4) श्री सिद्ध जिन हाऊसिंग सोसायटी एवं (5) श्री बाहुबली दि. जैन मन्दिर में पाठशालाओं का संचालन किया जा रहा है।

उक्त पाठशालाओं में लगभग 125-150 बालकों को बालबोध पाठमाला से लेकर तत्त्वज्ञान पाठमाला के माध्यम से धार्मिक व नैतिक संस्कारों के साथ-साथ जैनदर्शन का प्रारंभिक ज्ञान कराया जा रहा है।

समय-समय पर बालकों के विकास हेतु विभिन्न प्रतियोगिता व सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते है। ●

विधान सम्पन्न

अक्कलकोट (महा.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में दिनांक 19 अप्रैल, 2006 को श्रीमती विजया भामण्डल शाह परिवार की ओर से श्री पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया।

विधानादि के सम्पूर्ण कार्य पण्डित प्रशांतकुमारजी मोहरे, सोलापुर ने कराये। आपके एक प्रवचन का लाभ भी साधर्मियों को प्राप्त हुआ। ●

प्रवचनसार का सार

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

'यह मेरे अनुकूल है', 'यह मेरे प्रतिकूल है' ह्न ऐसा जो उपराग हुआ, वास्तव में वही स्निग्ध है और वही रूक्ष है। राग स्निग्ध है और द्वेष रूक्ष है ह्न इसप्रकार से आत्मा में स्निग्धता और रूक्षता है और इसीकारण से आत्मा पुद्गलकर्म से बंधता है।

रत्तो बंधदि कम्मं मुच्चदि कम्मेहिं रागरहिदप्पा।
एसो बंधसमासो जीवाणं जाण णिच्छयदो।।१७९।।

(हरिगीत)

रागी बाँधे कर्म छूटे राग से जो रहित है।
यह बंध का संक्षेप है बस नियतनय का कथन यह।।

रागी आत्मा कर्म बाँधता है, रागरहित आत्मा कर्मों से मुक्त होता है ह्न यह जीवों के बंध का संक्षेप है; निश्चय से ऐसा जानो।

इस गाथा में स्पष्ट लिखा है कि रागी जीव कर्म को बाँधता है। यहाँ 'रागी' का तात्पर्य एकत्वबुद्धि पूर्वक राग करनेवाला है। मिथ्यात्व सहित राग अथवा एकत्वबुद्धिवाला राग मात्र राग नहीं है; अपितु अनन्तानुबंधी राग है।

इस गाथा में जो 'राग' शब्द प्रयुक्त हुआ है, उसमें मिथ्यात्व और द्वेष भी शामिल हैं; क्योंकि राग मात्र राग के लिए भी प्रयुक्त होता है और मोह-राग-द्वेष के प्रतिनिधि के रूप में भी प्रयुक्त होता है। जब हम भगवान को वीतरागी कहते हैं तो भगवान मात्र राग से ही रहित नहीं है; अपितु मोह और द्वेष से भी रहित हैं।

रागी आत्मा कर्म बाँधता है, रागरहित आत्मा कर्मों से मुक्त होता है ह्न यह जीवों के बंध का निश्चय से कथन है। 'पर से बँधता है' यह व्यवहार की बात है एवं 'अपने मोह-राग-द्वेष से बँधता है' यह निश्चयनय की बात है।

जो लोग ऐसा कहते हैं कि 'पर को जानना बंध का कारण है' उनका यह कथन भी सही नहीं है। आध्यात्मियों में पहले यह बात चलती थी कि आत्मा पर को जानता ही नहीं है; लेकिन पर को जानने के अनेक आगम प्रमाण उपलब्ध होने से यह बात ज्यादा टिक नहीं पाई, तो वे ही लोग ऐसा कहने लगे कि पर को जानना बंध का कारण है।

अरे भाई ! पर को जानना भी बंध का कारण नहीं है और पर को नहीं जानना भी बंध का कारण नहीं है। ज्ञानगुण तो बंध में कारण है ही नहीं।

अष्टसहस्त्री में यह कथन आता है ह्न

अज्ञानाच्चेद्ध्रुवो बंधो ज्ञेयानन्तान्न केवली।

अज्ञान से यदि बंध मानोगे तो हमेशा बंध होता रहेगा; क्योंकि ज्ञेय तो अनंत है और प्रत्येक आदमी केवलज्ञान होने से पहले केवली नहीं है, एवं सभी को औदयिक अज्ञान विद्यमान है।

इससे सिद्ध होता है कि नहीं जानना बंध का कारण नहीं है और जानना मोक्ष का कारण नहीं है। पर को निजरूप जानना बंध का कारण है और निज को निजरूप जानना, निजरूप मानना एवं निज में ही रमना मोक्ष का कारण है। मात्र जानना बंध का कारण नहीं है, पर को निजरूप जानना बंध का कारण है; क्योंकि जानना तो आत्मा का स्वभाव है।

परिणामादो बंधो परिणामो रागदोसमोहजुदो।
असुहो मोहपदोसो सुहो व असुहो हवदि रागो।।180।।

(हरिगीत)

राग-रुष अर मोह ये परिणाम इनसे बंध हो।
राग है शुभ-अशुभ किन्तु मोह-रुष तो अशुभ ही।।

परिणाम से बंध है, परिणाम राग-द्वेष-मोह युक्त हैं और उनमें से मोह और द्वेष अशुभ हैं, राग शुभ अथवा अशुभ होता है।

पूर्व गाथा में यह कहा था कि रागी जीव बंधता है और इस गाथा में आचार्यदेव यह बता रहे हैं कि राग में क्या-क्या गर्भित है। 'परिणाम से बंध होता है' का तात्पर्य यह है कि राग परिणाम से बंध होता है, स्वभाव बंध का कारण नहीं है। यदि स्वभाव पर दृष्टि रखी जाय, तो स्वभाव मोक्ष का कारण अवश्य है। स्वभाव पर दृष्टि रखने का तात्पर्य यह है कि 'यह मैं हूँ' ह्न ऐसी मान्यता का होना।

इसके बाद गाथा में यह कहा है कि जो परिणाम मोह-राग-द्वेष से युक्त हैं, उन परिणामों से बंध होता है। यद्यपि जानना भी परिणाम है, परिणमन है; किन्तु जाननेवाले परिणमन से भी बंध नहीं होता और न ही नहीं जाननेवाले परिणमन से बंध होता है।

गाथा में यह कहा है कि मोह व द्वेष ये दोनों अशुभभावरूप हैं; क्योंकि मिथ्यात्व कभी शुभ नहीं होगा, अशुभ ही रहेगा एवं द्वेष भी कभी शुभ नहीं होगा, अशुभ ही रहेगा; लेकिन राग शुभ भी होता है और अशुभ भी होता है।

इसप्रकार 'मोह-राग-द्वेष' इन तीन के समूह में ढ़ाई तो अशुभ हैं और आधा शुभ है। मोह अशुभ है, द्वेष अशुभ है; लेकिन राग आधा शुभ है और आधा अशुभ है; क्योंकि गाथा में लिखा है कि राग शुभ अथवा अशुभ होता है।

सुहपरिणामो पुण्णं असुहो पावं ति भणिदमण्णेसु।
परिणामो णण्णगदो दुक्खक्खयकारणं समये।।181।।

(हरिगीत)

पर के प्रति शुभभाव पुण पर अशुभ तो बस पाप है।
पर दु:खक्षय का हेतु तो बस अनन्यगत परिणाम है।।

पर के प्रति शुभ परिणाम पुण्य हैं और अशुभ परिणाम पाप है ह्न ऐसा कहा है; और जो दूसरे के प्रति प्रवर्तमान नहीं है ह्न ऐसा परिणाम दु:ख-क्षय का कारण है ह्न ऐसा शास्त्रों में कहा गया है।

इस गाथा में यह कहा है कि पर के प्रति शुभ परिणाम पुण्य बंध का कारण है, पर के प्रति अशुभ भाव पाप बंध का कारण है और अपने प्रति परिणाम मोक्ष का कारण है। यहाँ पर आचार्यदेव ने अपने प्रति होनेवाले परिणाम में शुभ और अशुभ ह्न ऐसा भेद नहीं किया है। अन्य के आश्रय से नहीं, अपितु अपने आश्रय से जो परिणाम होता है, वह परिणाम बंध का कारण नहीं; अपितु दु:ख के क्षय का कारण है।

अपने लक्ष्य से जो परिणाम होता है, वह परिणाम शुभ या अशुभ नहीं होता है। 'मुझे अपनी आत्मा का कल्याण करना है' यह परिणाम शुभ

परिणाम है; क्योंकि यह आत्मा के लक्ष्य से नहीं है। जब आत्मा ज्ञान का ज्ञेय बनता है अर्थात् 'यह मैं हूँ' ऐसी मान्यता होना, ऐसा ही जानना और उसी में रमना ह्न ऐसे परिणाम को आत्मा के लक्ष्य से हुआ परिणाम कहा जाता है।

भणिदा पुढविप्पमुहा जीवणिकायाध थावरा य तसा।
अण्णा ते जीवादो जीवो वि य तेहिंदो अण्णो।।182।।

(हरिगीत)

पृथ्वी आदि थावरा त्रस कहे जीव निकाय हैं।
वे जीव से हैं अन्य एवं जीव उनसे अन्य है।।

अब स्थावर और त्रस ऐसे जो पृथ्वी आदि जीवनिकाय कहे गये हैं, वे जीव से अन्य हैं और जीव भी उनसे अन्य हैं।

इस गाथा में जीव की स्वद्रव्य में प्रवृत्ति और परद्रव्य से निवृत्ति की सिद्धि के लिये स्व-पर का विभाग बताया है।

वास्तव में कोई भी अपना नहीं है। पर को अपना या पराया कहना राग-द्वेष का कारण है; इसलिए अज्ञान है। कहा भी है ह्न

मोहादि मेरे कुछ नहीं, मैं एक ज्ञायकभाव हूँ।
रागादि मेरे कुछ नहीं, मैं एक ज्ञायकभाव हूँ।
देहादि मेरे कुछ नहीं, मैं एक ज्ञायकभाव हूँ।

जैनदर्शन के अनुसार सारी दुनिया को दो भागों में बाँटा है। एक तो स्व है और दूसरा पर है। आचार्य कहते हैं कि स्व में प्रवृत्ति करो और पर से निवृत्ति करो।

अन्य दर्शन में भी दुनियाँ को दो भागों में बाँटा जाता है। उनके यहाँ एक ओर राम है और दूसरी ओर गाँव अर्थात् उनके यहाँ सारी दुनियाँ को एक ओर रखा और राम को एक ओर रखा; लेकिन जैनदर्शन में दुनियाँ को इसतरह दो भागों में नहीं बाँटा है। जैनदर्शन में एक तो स्वयं आत्माराम है और दूसरे बाकी के अन्य सभी पदार्थ। अन्य दर्शन में जहाँ भगवान को अपने में रखा जाता है; वहीं जैनदर्शन में अरहंत और सिद्ध भगवान को भी पर में रखा जाता है। इस स्व-परभेद के ज्ञान के बिना अपना कल्याण संभव नहीं है, इसलिये ज्ञानतत्वप्रज्ञापन महाधिकार के ज्ञानज्ञेयाविभागाधिकार में स्व-पर के विभाग की चर्चा की है।

अब, 'पुद्गल परिणाम आत्मा का कर्म क्यों नहीं है' ह्न ऐसे सन्देह को दूर करनेवाली 185 वीं गाथा इसप्रकार है ह्न

गेण्हदि णेव ण मुंचदि करेदि ण हि पोग्गलाणि कम्माणि।
जीवो पोग्गलमज्झे वट्टण्णवि सव्वकालेसु।।

(हरिगीत)

जीव पुद्गल मध्य रहते हुए पुद्गलकर्म को।
जिनवर कहें सब काल में ना ग्रहे-छोड़े-परिणमे।।

जीव सभी कालों में पुद्गलों के मध्य में रहता हुआ भी पौद्गलिक कर्मों को वास्तव में न तो ग्रहण करता है, न छोड़ता है और न करता है।

जीव हमेशा पुद्गलों के मध्य में रहता है। जब जीव का देह के साथ संयोग रहता है; उस समय भी जीव पुद्गलों के बीच रहता है तथा जब जीव सिद्ध हो जाता है; उस समय भी जीव पुद्गलों के बीच में ही रहता है; क्योंकि लोकाकाश में पुद्गल ठसाठस भरे हैं; चाहे वे जीव से संबंधित हो या असंबंधित। जीव पुद्गलों के बीच में रहता हुआ भी पुद्गल कर्मों को न तो ग्रहण करता है और न छोड़ता है। पुद्गल का परिणमन पुद्गल में होता है और जीव का परिणमन जीव में होता है, जीव के परिणमन में पुद्गल कुछ भी नहीं करता है।

यदि आत्मा पुद्गलों को कर्मरूप परिणमित नहीं करता है तो फिर आत्मा किसप्रकार पुद्गल कर्मों के द्वारा ग्रहण किया जाता और छोड़ा जाता है ? इसका निरूपण करनेवाली गाथा 186 इसप्रकार है ह्न

स इदाणिं कत्ता सं सगपरिणामस्स दव्वजादस्स।
आदीयदे कदाइं विमुच्चदे कम्मधूलीहिं।।

(हरिगीत)

भवदशा में रागादि को करता हुआ यह ,आतमा।
रे कर्मरज से कदाचित् यह ग्रहण होता छूटता।।

वह अभी (संसारावस्था में) द्रव्य से (आत्मद्रव्य में) उत्पन्न होनेवाले (अशुद्ध) स्वपरिणाम का कर्त्ता होता हुआ कर्मरज से ग्रहण किया जाता है और कदाचित् छोड़ा भी जाता है।

इस गाथा में यह कहा है कि आत्मा कर्म के निमित्त से रागरूप नहीं परिणमता तथा आत्मा अपने आत्मद्रव्य में उत्पन्न होनेवाले स्वपरिणामों का कर्त्ता है, रागादिक का कर्त्ता है; लेकिन कर्मों का कर्त्ता नहीं है।

इसप्रकार आत्मा में उत्पन्न होनेवाले राग परिणामों के कारण आत्मा स्वयं कर्म से बंधता है तथा आत्मा में होनेवाले वीतराग परिणामों से स्वयं कर्मों से छूटता है। इसप्रकार मूलत: राग परिणाम ही बंध के कारण हैं।

इसीप्रकार का भाव बनारसीदासजी ने नाटक समयसार के बंधाधिकार के इस छंद में प्रकट किया है ह्न

कर्मजाल-वर्गना सौं जग मैं न बंधै जीव,
बंधै न कदापि मन-वच-काय-जोग सौं।
चेतन अचेतन की हिंसा सौं न बंधै जीव,
बंधै न अलख पंच-विषै-विष-रोग सौं।।
कर्म सौ अबंध सिद्ध जोग सौं अबंध जिन,
हिंसा सौं अबंध साधु ग्याता विषै-भोग सौं।
इत्यादिक वस्तु के मिलाप सौं न बंधै जीव,
बंधै एक रागादि असुद्ध-उपयोग सौं।।

इसी संबंध में गाथा 186 का भावार्थ भी द्रष्टव्य है ह्न

'अभी संसारावस्था में जीव पौद्गलिक कर्म परिणाम को निमित्तमात्र करके अपने अशुद्ध परिणाम का ही कर्त्ता है, परद्रव्य का कर्त्ता नहीं होता।

इसीप्रकार जीव अपने अशुद्ध परिणाम का कर्त्ता होने पर जीव के उसी अशुद्ध परिणाम को निमित्तमात्र करके कर्मरूप परिणमित होती हुई पुद्गलरज विशेष अवगाहरूप से जीव को ग्रहण करती है और कभी स्थिति के अनुसार रहकर अथवा जीव के शुद्ध परिणाम को निमित्तमात्र करके छोड़ती है।' **(क्रमश:)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

चिंतामणी पार्श्वनाथ (भिलोड़ा –गुज.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चिंतामणी पार्श्वनाथ में स्व. शाह कोकिलाबेन अरविंदकुमार चोरिवाड़ परिवार के आयोजकत्व में रायदेश दिगम्बर जैन आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आठवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर दिनांक 25 से 30 अप्रैल, 06 तक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रात: एवं दोपहर में बाल ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर द्वारा गुणस्थान विवेचन एवं पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर द्वारा द्रव्यसंग्रह की सारगर्भित, सरल व सहज भाषा में कक्षा ली गई। प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि में ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल' ललितपुर के समयसार एवं मोक्षमार्ग प्रकाशक पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रौढ़कक्षा पण्डित अश्विनभाईजी जैन, मुम्बई ने ली।

इस अवसर पर पंचमेरू मण्डल विधान का आयोजन श्रीमती शाह कंचनबेन बाबूलाल चोरिवाड़ परिवार हस्ते मुकेशभाई द्वारा किया गया।

विधि-विधानादि के कार्य, बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित आशीषजी शास्त्री, टीकमगढ़ एवं पण्डित प्रयंकजी शास्त्री, रहली ने सम्पन्न कराये।

शिविर के मध्य दिनांक 29 अप्रैल, 2006 को आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की 117 वीं जन्मजयंती हर्षोल्लासपूर्वक मनाई गयी। इस अवसर पर आयोजित सभा में समस्त विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये।

शिविर के मध्य डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित अनुपम कृति 'पश्चात्ताप (खण्डकाव्य)' का विमोचन किया गया। ●

सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर प्रारंभ

सोलापुर (महा.) : यहाँ श्री 1008 आदिनाथ महाराज दिगम्बर जैन मन्दिर में 108 श्री विभवसागरजी महाराज के सान्निध्य में दिनांक 30 अप्रैल, 2006 को भक्तामर मण्डल विधान पूर्वक सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर का शुभारंभ किया गया। विधान का आयोजन श्री रजनीशजी कोठड़िया परिवार द्वारा किया गया।

दिनांक 1 जून, 2006 तक चलनेवाले इस शिविर में प्रात: कल्याणमन्दिर स्तोत्र व दोपहर में भक्तामर स्तोत्र की कक्षा ब्र. नीतू दीदी एवं पण्डित प्रशांतकुमारजी मोहरे द्वारा ली जायेगी। सायंकाल बालकक्षा पण्डित प्रशांतकुमारजी उखलकर, गोवर्धन द्वारा ली जायेगी। ●

वैराग्य समाचार

1. वसगड़े (कोल्हापुर-महा.) निवासी पण्डित शांतीनाथजी पाटील का दिनांक 7 मई, 06 को प्रात: दुर्घटनाग्रस्त होने से आकस्मिक देहावसान हो गया। जिसके समाचार सुनकर समस्त स्वाध्यायप्रेमियों में शोक की लहर फैल गयी।

आप अत्यन्त स्वाध्यायप्रेमी एवं सरल व्यक्तित्व के धनी थे। विगत 36 वर्षों से आप स्थानीय मन्दिर में प्रतिदिन प्रवचन करते थे। श्री सर्वोदय स्वाध्याय समिति, कोल्हापुर के आप प्राणभूत कार्यकर्ता थे। तत्त्वप्रचार-प्रसार हेतु भविष्य में अनेक कार्य करने की आपकी प्रबल भावना थी। इसी के फलस्वरूप आपके सुपुत्र पण्डित कीर्तिकुमारजी पाटील वर्तमान में महाविद्यालय की शास्त्री कक्षा में अध्ययनरत है।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, श्री टोडरमल महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक समिति आपके प्रति हार्दिक संवेदना प्रगट करते हुये भावना भाती है कि दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

जिनेन्द्र शास्त्री अध्यक्ष मनोनीत

श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक छात्र पण्डित जिनेन्द्रकुमारजी शास्त्री, उदयपुर को भारतीय जनता युवा मोर्चा के दक्षिण मण्डल का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व आप रोड़वेज व्यापार संघ (राज.राज्यपथ परि.निगम-सरकार, उदयपुर) का चुनाव जीत चुके है। श्री दि. जैन आ. संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर एवं राज. महाराणा आ. संस्कृत महाविद्यालय, उदयपुर के छात्रसंघ अध्यक्ष भी रह चुके है तथा फतह उच्च मा. विद्यालय के विकास एवं छात्र निधि कोष के सदस्य भी है। उक्त कार्यों हेतु अनेक संगठनों द्वारा आप सम्मानित भी किये जा चुके है।

इस उपलब्धी हेतु महाविद्यालय परिवार द्वारा आपको हार्दिक बधाई !

अनोखी पत्रिका के विशेषांक का विमोचन

जयपुर (राज.) : भगवान महावीरस्वामी के 2605 वीं जन्मजयंती के अवसर पर अनोखी पत्रिका का 13 वाँ वार्षिक बहुरंगीय विशेषांक का विमोचन सांसद श्री रामदासजी अग्रवाल, महापौर श्री अशोकजी परनामी, श्री नानगरामजी जौहरी, राज. जैन सभा के अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी पाटनी एवं श्री कमलबाबु जैन द्वारा किया गया। पत्रिका में भगवान महावीर के जीवन, सिद्धान्त एवं दर्शन पर आधारित सामग्री प्रकाशित की गई है। पत्रिका का संपादन एवं प्रकाशन श्री मनीष बैद, जयपुर द्वारा किया गया है।

जैन छात्र-छात्राओं के लिये विशेष अवसर

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त देश का प्रथम जैन अल्पसंख्यक तीर्थंकर महावीर डेंटल कॉलेज एवं रिसर्च सेन्टर तथा मैनेजमेन्ट कॉलेज मुरादाबाद (उ.प्र.) में कार्यरत है। उक्त संस्थान में देश के विभिन्न प्रान्तों से आये हुये अनेक छात्र अध्ययनरत हैं।

दोनों संस्थानों में जैन छात्र-छात्राओं को प्रवेश में वरीयता व रियायत दी जाती है। जो जैन छात्र उक्त कॉलेज में प्रवेश लेना चाहते हों, वे निम्न पते पर सम्पर्क करें। **ह्न एस. पी. जैन, तीर्थंकर महावीर डेंटल कॉलेज व रिसर्च सेंटर, दिल्ली रोड़, मुरादाबाद (उ.प्र.) मो.** 09837848862

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) मई (द्वितीय) 2006
RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व धर्मदर्शन तथा इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127